बार्षिक कार्यक्रम

01. **डोलग्यारस उत्सव** -

प्रतिवर्ष भाद्रपद शुक्ल पक्ष की पद्मा एकादशी (डोल ग्यारस) उत्सव पं. विश्वनाथ जी शास्त्री द्वार पर संध्या काल में श्रीरामलीला मेला समिति जिला कलेक्टर एवं अध्यक्ष द्वारा विदिशा नगर के मंदिरों के विमानों एवं देवाधिदेव श्रीगणपतिजी की झाँकियों की सामूहिक आरती मेला समिति सदस्यों, रजि. सभा सदस्यों एवं धार्मिक जनमानस की उपस्थिति में उतारकर धूम-धाम से मनाया जाता है। यह उत्सव तिथि अनुसार प्रत्येक वर्ष सितम्बर-अक्टूबर माह में किसी एक दिवस उपरोक्त तिथि को मनाया जाता है।

02. **दशहरा चल समारोह** -

प्रतिवर्ष आश्विन शुक्ल पक्ष की दसवी तिथि को मर्यादा पुरूषोत्तम भगवान श्रीरामचंद्रजी के विजयोत्सव का महापर्व दशहरा पर प्रधानसंचालक निवास श्री विश्वनाथ शास्त्रीपुरम, चौपड़ा से भगवान श्रीरामचंद्र जी भव्य झाँकी का विशाल चल समारोह श्री लक्ष्मण जी महाराज, श्री हनुमान जी एवं श्री बिभीषण जी महाराज के साथ श्रीरामलीला के रथ पर स्थारूढ़ होकर गणमान्य नागरिकों की उपस्थिति में नगर के मुख्यमार्गो से होता हुआ दशहरा मैदान (जैन कालेज) पहुंचता है जहाँ पर रंगारंग आतिशबाजी के प्रदर्शन उपरांत रावण के पुतले का दहन किया जाता है। इस कार्य में नगरपालिका परिषद, विदिशा व जिला प्रशासन का सदैव सहयोग प्राप्त होता है। यह चल समारोह तिथि अनुसार अक्टूबर-नबंवर माह में किसी एक दिवस निकाला जाता है।

03. **अक्षय (आंवला) नवमी, उदयगिरी परिक्रमा** -

प्रत्येक वर्ष दीपावली के बाद कार्तिक शुक्ल पक्ष की नवमी पर बिगत 123 वर्षो से निरन्तर विदिशा नगर सहित आस-पास के क्षेत्रों के लगभग 100 मंदिरों के देवस्वरूप ध्वजों की विशाल उदयगिरी परिक्रमा प्रधानसंचालक निवास श्री विश्वनाथ शास्त्रीपुरम, चौपड़ा से प्रारंभ होकर रामघाट, हेमामालिनी डेम (बंदा), सूर्य मंदिर, उदयगिरी भैरव मंदिर, प्राचीन नृसिंह शिला (यहाँ पर कवि सम्मेलन भी आयोजित होता है), वन विभाग नर्सरी में भोजन-विश्राम, श्री शिवगुफा (उदयगिरी मेला स्थल), भगवान बारह, जटाशकंर, बैसनगर में शेषशाय बिष्णु भगवान मंदिर, बड़े श्रीगणेश मंदिर, गणेशपुरा से त्रिवेणी घाट, चरणतीर्थ घाट पर ध्वजों, माँ वैत्रावती व प्राचीन मंदिरों की

सामूहिक आरती का संध्याकालीन मनोरम दृश्य दर्शन उपरांत ध्वजों की श्रीराम लीला प्रागंण में आराधना की जाती है जिसके बाद चल समारोह का समापन बड़ाबाजार से होकर रायसेन गेट स्थित श्रीगणेश मंदिर पर पहुंचकर होता है।

04. **अद्वितीय चलित श्रीरामलीला -**

बिगत ११२ वर्षो से निरन्तर प्रतिवर्ष पौष शुक्ल पक्ष की चौदस/पूर्णिमा तिथि (मकर संक्राति के पावन पर्व पर) पर दिनाँक १४ जनवरी से ०७ फरवरी तक २५ दिवसीय भारत की एकमात्रा चलित श्रीराम लीला का भव्य प्रदर्शन विशाल प्रागंण में किया जाता है जिसे देखने भारत ही नहीं अपितु विदेशों से भी रामभक्त आते हैं। यह वृहद कार्यक्रम अवसर पर पारिवारिक माहौल व निःशुल्क अभिनय व सेवा इस प्रकल्प की महत्तवपूर्ण विशेषता है। इससे सबंधित ओर जानकारी भारत की अद्वितीय चलित श्रीराम लीला में वर्णित है।

05. **भव्य मेला -**

श्रीरामलीला के साथ ही यह भव्य मेला भी लगया जाता हैं जहाँ पर भारत के विभिन्न प्रांतों से व्यापारी चूड़ी, मनिहारी, खेल-खिलौने, वर्तन, जूता-चप्पल, फर्नीचर, कपड़े, इलेक्ट्रानिक्स आयटम, आटो मोबाईल, क्राकरी सहित अन्य घरेलु उपयोगी सामग्री का व्यवसाय करने आते हैं वही संपूर्ण परिवार के लिए मेले में मनोरजंन के भरपूर साधन झूले (विभिन्न प्रकार के लगभग १०० झूले), जादू, खेल-तमाशे आदि उपलब्ध कराने वाले व्यापारी भी आते हैं तो वहीं स्थाई जायकेदार स्वाद के लिए विभिन्न प्रकार की खादय सामग्री भी मेले में पर्याप्त उपलब्ध होती है इन सभी चीजों का लाभ लेने विदिशा जिला सहित आस-पास के अनेकों जिलों से धार्मिक जनमानस लाखों की संख्या में आता हैं। मेला समापन उपरांत मिर्च-मसालों का प्रसिद्ध मेला भी लगभग ०३ माह इसी स्थान पर लगता है।